Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) ____________________

   (Name) ____________________

2. (Signature) ____________________

   (Name) ____________________

Roll No. | | | | | | | | |

(In figures as per admission card)

Roll No. ____________________

(In words)

Test Booklet No.

D – 0308

PAPER – III

PHILOSOPHY

Time : 2½ hours] **[Maximum Marks : 200**

Number of Pages in this Booklet : **40** Number of Questions in this Booklet : **26**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answers to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Test Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the question booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the Test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc. is prohibited.**
10. **There is NO negative marking.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुये रिक्त स्थान पर ही लिखिये।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी। पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी सील को फाड़ लें। खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं। दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ / प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले ले। इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे। उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें।
8. **केवल नीले / काले बाल प्वाईंट पैन का ही इस्तेमाल करें।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है।**
10. **गलत उत्तर के लिए अंक नहीं काटे जायेंगे।**

PHILOSOPHY

दर्शनशास्त्र

PAPER – III

प्रश्न-पत्र – III

NOTE: **This paper is of two hundred (200) marks containing four (4) sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.**

नोट : **यह प्रश्नपत्र दो सौ (200) अंकों का है एवं इसमें चार (4) खंड है। अभ्यर्थियों को इन में समाहित प्रश्नों का उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है।**

SECTION - I

खण्ड – I

Note : This section contains five (5) questions based on the following paragraph. Each question should be answered in about thirty (30) words and each carries five (5) marks.

(5x5=25 marks)

नोट : इस खंड में निम्नलिखित अनुच्छेद पर आधारित पाँच (5) प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग तीस (30) शब्दों में अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पाँच (5) अंकों का है।

(5x5=25 अंक)

The earliest preoccupation of man in his awakened thoughts and, as it seems, his inevitable and ultimate preoccupation, -- for it survives the longest periods of scepticism and returns after every banishment, -- is also the highest which his thought can envisage. It manifests itself in the divination of Godhead, the impulse towards perfection, the search after pure Truth and unmixed Bliss, the sense of a secret immortality. The ancient dawns of human knowledge have left us their witness to this constant aspiration; today we see a humanity satiated but not satisfied by victorious analysis of the externalities of Nature preparing to return to its primeval longings. The earliest formula of Wisdom promises to be its last, -- God, Light, Freedom, Immortality.

These persistent ideals of the race are at once the contradiction of its normal experience and the affirmation of higher and deeper experiences which are abnormal to humanity and only to be attained, in their organised entirety, by a revolutionary individual effort or an evolutionary general progression. To know, possess and be the divine being in an animal and egoistic consciousness, to convert our twilit or obscure physical mentality into the plenary supramental illumination, to build peace and a self-existent bliss where there is only a stress of transitory satisfactions besieged by physical pain and emotional suffering, to establish an infinite freedom in a world which presents itself as a group of mechanical necessities, to discover and realise the immortal life in a body subjected to death and constant mutation, -- this is offered to us as the manifestation of God in Matter and the goal of Nature in her terrestrial evolution. To the ordinary material intellect which takes its present organisation of consciousness for the limit of its possibilities, the direct contradiction of the unrealised ideals with the realised fact is a final argument against their validity. But if we take a more deliberate view of the world's workings, that direct opposition appears rather as part of Nature's profoundest method and the seal of her completest sanction . . . .

The accordance of active Life with a material of form in which the condition of activity itself seems to be inertia, is one problem of opposites that Nature has solved and seeks always to solve better with greater complexities.

- Sri Aurobindo

अतिप्राचीन काल में जबकि मनुष्य में सप्रकाश विचारों का आविर्भाव हुआ, उसने एक महान लक्ष्य की अभीप्सा की। ऐसा प्रतीत होता है कि यह लक्ष्य उसके लिये अनिवार्य और चरम है, कारण संशयवाद के दीर्घतम युगों के अनन्तर भी यह विद्यमान रहता है और जब-जब इसे दूर हटाया जाता है तब-तब यह फिर लौट आता है। यह लक्ष्य जहाँ तक उसके विचारों की पहुंच सम्भव है, उच्चतम भी है। यह लक्ष्य उसके सामने ईश्वर, सुपुर्णता, सत्य, आनन्द, अमृतत्व के रूप में प्रकट हुआ। अत: इसकी अभीप्सा करते हुए वह ईश्वर के अन्वेषण में प्रवृत्त हुआ, उसके भीतर सुपूर्णता के प्रति अन्तर्वेग उठा, वह शुद्ध सत्य और अमिश्र आनन्द की खोज में प्रवृत्त हुआ, मरणशील मानव सत्ता में गुप्त भाव से अमरता रहती है यह आभास उसे हुआ; मानव ज्ञान की प्राचीन उषाओं से हमें इस बात की साक्षी मिलती हे कि यह अभीप्सा सतत् विद्यमान रही है; आज हमें जो मानवजाति दिखाई दे रही है उसने प्रकृति के बाह्य रुपों का सफल, सविजय विश्लेषण किया है; इससे यह अंघाई हुई है परन्तु सन्तुष्ट नहीं है और इस कारण अपनी प्राक्कालीन अभीप्साओं की ओर लौटने की तैयारी कर रही है। ईश्वर, ज्योति, मुक्ति अमरता के रुप में जो ज्ञान का प्रारंभिक सूत्र था वह ज्ञान का अन्तिम सूत्र होने का दावा कर रहा है।

मानव जाति के ये अटल आदर्श एक ओर तो उसके सामान्य अनुभव के विरुद्ध हैं और दूसरी ओर उसके उच्चतर और गम्भीरतर अनुभवों का समर्थन करते हैं; ये दूसरे प्रकार के अनुभव वे हैं जो मानव जाति के लिये असामान्य हैं और जिनकी व्यवस्थित और पूर्ण रुप में प्राप्ति या तो केवल व्यक्तिगत व्यवस्था क्रान्तिकारी प्रयास से ही हो सकती है अथवा विकासात्मिका सर्वसामान्य क्रमोन्नति के द्वारा। जड़तत्त्व में ईश्वर की अभिव्यक्ति तथा पृथ्वी पर होने वाले प्रकृति के क्रमविकास में उसका लक्ष्य इस रूप में हमारे सामने उपस्थित किये जाते हैं: मनुष्य की जो वर्तमानकालीन पशुयावमयी और अहंभावमयी चेतना है उसमें ब्रह्म को जानना, उसे प्राप्त कर लेना और वही हो जाना, अपने स्वल्प प्रकाश वाले या धुँधले भौतिक मन (मानस ज्ञान) को पूर्ण अतिमानस प्रकाश के रूप में परिणत कर देना; शारीरिक पीड़ा और भावावेगात्मक दु:ख से आक्रान्त जो केवल क्षणिक तृप्तियाँ हैं, उनके स्थान पर शांति और स्वयंसत् आनन्द का निर्माण करना; जो जगत् हमें यांत्रिक विवशताओं का समूह जान पड़ता है उसमें अनन्त स्वातंत्र्य को स्थापित करना; हमारा जो यह देह सदा रोग, बुढ़ापा और मृत्यु का दास बना हुआ है उसमें अमर जीवन को खोजना और प्राप्त करना। मनुष्य की साधारण भौतिक बुद्धि अपनी चेतना के वर्तमान गठन के विषय में यह मानती है कि यही इसकी सम्भावनाओं की चरम सीमा है; इस बुद्धि को अप्राप्त आदर्शों का अनुभूत तथ्यों से जो प्रत्यक्ष विरोध दिखलाई देता है उसे यह अन्तिम सत्य मान कर इसके द्वारा उन आदर्शों की प्रामाणिकता का खण्डन करती है; परन्तु यदि हम विश्व की क्रियाओं पर अधिक सावधानी पूर्वक विचार करें तो ऐसा जान पड़ता है कि यह प्रत्यक्ष विरोध प्रकृति की गम्भीरतम प्रक्रिया का अंग है और इस पर उसके पूर्णतम अनुमोदन की छाप लगी हुई है। .... सक्रिय प्राण की ऐसे रुपवान् भौतिक द्रव्य के साथ संगति जिस भौतिक द्रव्य में कि स्वयं क्रिया की अवस्था ही अक्रियता (जड़ता) प्रतीत होती है, विरोधियों की एक समस्या है जिसका प्रकृति ने समाधान किया है और सर्वदा अधिक पेचीदगियों के साथ अधिक उत्तम रूप में समाधान करने का प्रयत्न कर रही है।

— ***श्री अरविन्द***

1. How the ancient goal which man aspired for is inevitable and ultimate ?
प्राचीन लक्ष्य की जिसकी मनुष्य ने अभीप्सा की थी कैसे अपरिहार्य और चरम (लक्ष्य) है?

2. How this aspiration is manifested in human consciousness ?
मानवीय चेतना में यह अभीप्सा कैसे अभिव्यक्त हुई है?

3. How the persistent ideals of the human race are contradictory and abnormal to its normal experience ?

मानवजाति के अटल आदर्श उसके सामान्य अनुभव के लिये कैसे विरोधी और असामान्य हैं?

4. How these ideals of the race can be achieved ?

मानवजाति के ये आदर्श कैसे प्राप्त किये जा सकते हैं?

5. How is the direct opposition that appears in World's working, a part of Nature's profoundest method ?

विश्व की क्रिया में जो प्रत्यक्ष विरोध प्रतीत होता है वह कैसे प्रकृति की गम्भीरतम प्रक्रिया का एक अंग है?

SECTION - II

खण्ड – II

Note : This section contains fifteen (15) questions, each to be answered in about thirty (30) words. Each question carries five (5) marks.

(5x15=75 marks)

नोट : इस खंड में पाँच-पाँच (5-5) अंकों के पंद्रह (15) प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग तीस (30) शब्दों में अपेक्षित है।

(5x15=75 अंक)

6. Give an account of *ākās'a* as an independent *dravya*.

एक स्वतंत्र द्रव्य के रूप में आकाश का विवरण दीजिए।

7. State different kinds of *kāraṇa* with examples.

सोदाहरण विभिन्न प्रकार के कारण का कथन कीजिये।

8. Explain Hume's view of causality.

कारणता विषयक ह्यूम के मत की व्याख्या कीजिये ?

9. Explain Plato's Concept of Universal.

प्लेटो के सामान्य की अवधारणा की व्याख्या कीजिये।

10. State and explain either one *Nyāya* or one Bhaṭṭa definition of *Pramā* .

एक न्याय *या* एक कुमारिल भट्ट द्वारा दी गयी प्रमा की परिभाषा का कथन एवं व्याख्या कीजिये।

11. Explain with examples *vākyaśeṣa* as a means of *śabdagraha*.

शब्दग्रह के साधन के रूप में वाक्यशेष की सोदाहरण व्याख्या कीजिये।

12. Explain Socrate's view regarding Knowledge.

ज्ञान विषयक सुकरात के मत की व्याख्या कीजिये।

13. State and explain either one Nyāya or one Bauddha definition of perception.

एक न्याय या एक बौद्ध द्वारा दी गयी प्रत्यक्ष की परिभाषा का कथन एवं व्याख्या कीजिये।

14. Explain with examples different types of *asiddha or savyabhicāra hetvābhāsa*.

विभिन्न प्रकार के *असिद्ध या सव्यभिचार हेत्वाभास* की सोदाहरण व्याख्या कीजिये।

15. Give an account of *svadharma* following the *Gitā*.

गीता अनुसार *स्वधर्म* का विवरण दीजिये।

16. State reformative theory of punishment.

दण्ड के सुधारवादी सिद्धान्त का कथन कीजिये।

17. Explain Kant's Concept of Good-will.

काण्ट के शुभसंकल्प की अवधारणा की व्याख्या कीजिये।

18. Explain Mill's Utilitarianism.

मिल के उपयोगितावाद की व्याख्या कीजिये।

19. Give an example of sub–altern opposition. In case of sub–altern opposition what proposition (A, E, I, O) can be inferred from what proposition following the rules of inference by opposition ? Explain with examples.

गौण विरोध का एक उदाहरण दीजिये। गौण विरोध के सन्दर्भ में किस तरह के तर्कवाक्य से किस तरह के तर्कवाक्य (A, E, I, O) का अनुमान किया जा सकता है - विरोध अनुमान नियम का अनुसरण करते हुये। सोदाहरण व्याख्या कीजिये।

20. State the rules of existential quantification. Is there any restriction in their applications ? Discuss.

अस्तित्वमूलक परिमाणन के नियमों का कथन कीजिये। उनके प्रयोग में क्या कोई बाधा है? विवेचन कीजिये।

SECTION - III

खण्ड – III

Note : This section contains five (5) questions from each of the electives / specialisations. The candidate has to choose only one elective / specialisation and answer all the five questions from it. Each question carries twelve (12) marks and is to be answered in about two hundred (200) words.

(12x5=60 marks)

नोट : इस खंड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता से पाँच (5) प्रश्न हैं। अभ्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता को चुनकर उसी में से पाँचों प्रश्नों का उत्तर देना है। प्रत्येक प्रश्न बारह (12) अंकों का है व उसका उत्तर लगभग दो सौ (200) शब्दों में अपेक्षित है।

(12x5=60 अंक)

Elective - I

विकल्प – I

21. Discuss the doctrine of incarnation in the light of Christianity.
ईसाई धर्म के आलोक में अवतार के सिद्धान्त का विवेचन कीजिये।

22. Discuss the nature and destiny of man according to Christianity.
ईसाई धर्म के अनुसार मनुष्य के स्वरूप एवं नियति का विवेचन कीजिये।

23. Write an essay on religious experience.
धार्मिक अनुभूति पर एक निबन्ध लिखिये।

24. Discuss the means of liberation according to Hinduism.
हिन्दूधर्म के अनुसार मोक्ष के साधनों का विवेचन कीजिये।

25. Discuss the nature and importance of Comparative Religion.
तुलनात्मक धर्म के स्वरूप एवं महत्त्व का विवेचन कीजिये।

OR / अथवा

Elective - II

विकल्प – II

21. Distinguish between sense and reference following Frege. Can proper name have both senses and references ? Discuss.
फ्रेगे के अनुसार अर्थ एवं निर्देश के बीच अन्तर करें। क्या नाम का अर्थ एवं निर्देश दोनों हो सकते हैं? विवेचन करें।

22. What is the task of a theory of meaning ? Explain the controversy between holistic and atomistic approaches to meaning.
अर्थ के सिद्धान्त का कार्यभार क्या है? अर्थ के पूर्णतावाद सम्बन्धी और परमाणूवीय अभिगमों के बीच विवाद की व्याख्या करिये।

23. What exactly does the word '*meaning*' mean ? Explain Wittgenstein's use theory of meaning.
शब्द 'अर्थ' का वास्तव में मतलब क्या है? विटजनस्टीन के अर्थ का उपयोग सिद्धान्त की व्याख्या करें।

24. Give an account of linguistic theory of necessary propositions. How does Quine react to the theory ?

अनिवार्य तर्क वाक्यों के भाषा विषयक सिद्धान्त का विवरण दीजिए। किस प्रकार क्वाइन ने सिद्धान्त के प्रति प्रतिक्रिया की ?

25. Give an account of Russell's theory of definite description. How does Strawson criticise it ?

रसेल के निश्चित वर्णन के सिद्धान्त का विवरण दीजिए। स्ट्रासन ने इसकी किस प्रकार आलोचना की ?

OR / अथवा

Elective - III

विकल्प – III

21. Briefly explain the Central Concepts of Phenomenology.

दृश्य प्रपंच शास्त्र की केन्द्रीय अवधारणाओं की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

22. How are, according to Husserl, intentionality and consciousness related ? Analyse.

हुसरल के अनुसार, विषयोन्मुखता और चैतन्य किस प्रकार सम्बद्धित है ? विश्लेषण करिए।

23. Write a note on Husserl's method of reduction.

हुसरल की लघुकरण की विधि पर टिप्पणी लिखीये।

24. Explain the view that "*the text is dead*".

इस दृष्टिकोण का '*कृति की मृत्यु हो गई है*' व्याख्या कीजिये।

25. What is culture ? How is it viewed in phenomenology ? Discuss.

संस्कृति क्या है ? दृश्य प्रपंच शास्त्र में उसे किस प्रकार समझा जाता है ? विवेचन करें।

OR / अथवा

Elective - IV
विकल्प – IV

21. What is the status of *Saguṇa Brahman* in Śaṃkara's philosophy ? Explain.
शंकर के दर्शन में सगुण ब्रहमंन् की क्या स्थिती है? व्याख्या कीजिये।

22. Examine Rāmānuja's arguments against Śaṃkara's concept of *Māyā*.
शंकर द्वारा प्रतिपादित माया की अवधारणा के विरूद्ध रामानुज द्वारा दिये तर्क की समीक्षा कीजिये।

23. How does Nimbarka interpret the mahāvākya : *tat tvam asi* ? Discuss.
'तत्त्वमसि' महावाक्य की व्याख्या निम्बार्क कैसे करते हैं? विवेचन कीजिये।

24. Discuss the nature of śabda *pramāṇa* according to Vallabha.
वल्लभ के अनुसार शब्द प्रमाण के स्वरूप का विवेचन कीजिये।

25. Explain the nature of *mokṣa* according to Madhva.
मध्व के अनुसार मोक्ष के स्वरुप की व्याख्या कीजिये।

OR / अथवा

Elective - V
विकल्प – V

21. Discuss Gandhi's views on Non-violence.
गाँधी की अहिंसा सम्बधी दृष्टि की विवेचन कीजिये।

22. What is trusteeship ? And how is economic equality possible through trusteeship ?
न्यास का सिद्धान्त क्या है? इसके द्वारा आर्थिक समानता कैसे संभव है?

23. Discuss Gandhi's interpretation of religion.
गाँधी की धर्म की व्याख्या का विवेचन कीजिये।

24. Discuss the relation of means and ends in Gandhian Philosophy.
गाँधी दर्शन में साध्य एवं साधन के मध्य संबंध का विवेचन कीजिये।

25. Explain Gandhi's views for the emancipation of women.
स्त्री मुक्ति विषयक गाँधी के मत की व्याख्या कीजिये।

SECTION - IV

खण्ड – IV

Note : This section consists of one essay type question of forty (40) marks to be answered in about one thousand (1000) words on any of the following topics. This question carries 40 marks.

(40x1=40 marks)

नोट : इस खंड में एक चालीस (40) अंकों का निबन्धात्मक प्रश्न है जिसका उत्तर निम्नलिखित विषयों में से केवल एक पर, लगभग एक हजार (1000) शब्दों में अपेक्षित है।

(40x1=40 अंक)

26. The concept of *Mokṣa* in Indian Philosophy.

भारतीय दर्शन में *मोक्ष* की अवधारणा।

OR / अथवा

How can religious pluralism lead to social harmony ?

धार्मिक बहुलतावाद किस प्रकार सामाजिक सामंजस्य की प्राप्ति करा सकता है?

OR / अथवा

Arguments for and against *Idealism*.

प्रत्ययवाद के पक्ष और विपक्ष में दिये तर्क।

OR / अथवा

Does the doctrine of *Karma* admit the autonomy of moral agent ?

क्या *कर्म* सिद्धान्त नैतिक कर्त्ता की स्वायत्तता को स्वीकार करता है?

OR / अथवा

"The Combination of poet and philosopher in a single man is a dangerous combination".

''एक ही व्यक्ति में कवि और दार्शनिक का समुच्चय घातक है।''

FOR OFFICE USE ONLY							
Marks Obtained							
Question Number	**Marks Obtained**	**Question Number**	**Marks Obtained**	**Question Number**	**Marks Obtained**	**Question Number**	**Marks Obtained**
1		26		51		76	
2		27		52		77	
3		28		53		78	
4		29		54		79	
5		30		55		80	
6		31		56		81	
7		32		57		82	
8		33		58		83	
9		34		59		84	
10		35		60		85	
11		36		61		86	
12		37		62		87	
13		38		63		88	
14		39		64		89	
15		40		65		90	
16		41		66		91	
17		42		67		92	
18		43		68		93	
19		44		69		94	
20		45		70		95	
21		46		71		96	
22		47		72		97	
23		48		73		98	
24		49		74		99	
25		50		75		100	

Total Marks Obtained (in words) ....

(in figures) ....

Signature & Name of the Coordinator ....

(Evaluation) Date ....